E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

तत्र रम्या शकुन्तला

अथवा

अभिज्ञानशाकुन्तल का वैशिष्ट्य

अथवा

कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी
सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय

अभिज्ञानशाकुन्तल संस्कृत साहित्य ही नहीं अपितु विश्व-साहित्य की अमूल्य निधि है। पाश्चात्य विद्वानों को संस्कृत साहित्य के प्रति उन्मुख करने का श्रेय शाकुन्तल को ही है। आज महाकवि कालिदास को सम्पूर्ण विश्व में जो एक महनीय स्थान प्राप्त है उसमें भी इस अमरकृति का ही बहुमूल्य योगदान है। विद्वन्मण्डली काव्य में नाटक को रमणीय मानती है और नाटक में भी अभिज्ञानशाकुन्तल को सर्वश्रेष्ठ स्थान पर प्रतिष्ठित करती है- "काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला"।

अब प्रश्न यह है कि शाकुन्तल में वे कौन से गुण विद्यमान हैं जिनके कारण वह (शाकुन्तल) भारतीय तथा अभारतीय दोनों प्रकार के विद्वानों की प्रशंसा का भाजन बना है। इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए हमें कालिदास की काव्य प्रतिभा, नाट्यकला, काव्यशैली, रससर्जना आदि सभी का आकलन करना होगा। कालिदास तथा उनकी अमरकृति शाकुन्तल की महनीयता के कारणों की चर्चा की जा रही है-

१. कालिदास ने अपनी अप्रतिम नाट्यकला के बल पर इस नाटक की कथावस्तु की ऐसी संघटना की है जिससे आदि से लेकर अन्त तक सारी घटनायें अति स्वाभाविक ढंग से गतिशील होती हैं। कथावस्तु का कोई भी अंश न अनावश्यक है और न ही अनुपयोगी। वस्तुयोजना सम्बन्धी इस नाट्य कौशल ने शाकुन्तल को इतना आकर्षक एवं आह्लादकर बना दिया है कि पाठक एक ही बैठक में पूरे नाटक को देखने या सुनने के लिए लालायित हो जाता है।

२. शाकुन्तल में नाट्य के द्वितीय तत्त्व नेता अर्थात् पात्रों का संयोजन मी नितान्त सुन्दर तथा भव्य है। सारे पात्रों के क्रिया-कलाप नाटक के चरम उद्देश्य की पूर्ति में साहाय्य प्रदान करते हैं। कालिदास की चरित्र चित्रण सम्बन्धी अद्भुत कला ने सभी पात्रों को सजीव एवं क्रियाशील बना दिया है तथा उनके वास्तविक स्वरूप को हमारे सामने मूर्तिमान कर दिया है। वैयक्तिकता से मण्डित पात्र हमारे इतने नजदीक हो जाते हैं कि हम उनके -साथ तादात्म्यानुभूति कर अनायास ही काव्यानन्द की प्राप्ति कर लेते हैं।

३. नाटक में नाट्य के तृतीय तत्त्व रस का भी सुन्दर परिपाक हुआ है। शृङ्गार रस के मूर्धन्य कवि कालिदास की कमनीय कला को यहाँ खेलने का पूरा अवसर मिला है। फलतः शृङ्गार के दोनों पक्षों का उन्होंने हृदयग्राही उद्घाटन किया है। शृङ्गार के साथ ही बीच में कारुण्य का पुट देकर उन्होंने उसे और रमणीय बना दिया है। शृङ्गार के संयोग पक्ष से आरम्भ कर उसकी संयोग पक्ष में ही समाप्ति से नाटक सहृदयों के मानस मन्दिर में इस प्रकार प्रतिष्ठित हो गया है कि उसे वहाँ से स्थानान्तरित करना सम्भव नहीं है।

४. कालिदास की परिकल्पना के अग्रदूत विदूषक के द्वारा की गयी हास्य सर्जना दुष्यन्त का तो जी हलका करती ही है साथ ही वह सहृदयों के हृदय को भी आकर्षित एवं स्फूर्तिमय बना देती है, जिससे वह (सहृदय) प्रसन्न मुद्रा में नाट्य रस का आस्वादन करता है।

५. शाकुन्तल की भाषा पात्रोपयुक्त, अतीव सरल, प्रसादगुणमयी, लालित्यपूर्ण और मुहावरेदार है। उसके कथोपकथन इतने स्वाभाविक, रोचक तथा मनोवैज्ञानिक हैं कि पाठक स्वयं नाटक का पात्र बनकर कथोपकथन में भाग लेने के लिये लालायित हो जाता है। भाषा और संवाद के इन गुणों ने नाटक की कीर्ति में चार चांद लगा दिये हैं।

६. कालिदास की वैदर्भी शैली का इस नाटक में पूर्ण परिपाक है। यहाँ उनके वर्णनकौशल के प्रख्यापन का भी अवसर मिला है। वर्णनकला से वर्ण्य विषय (आश्रम, भयभीत मृग, शकुन्तला आदि) आँखों के समक्ष ना लगता है।

इस नाटक में कालिदास ने प्रेम एवं सौन्दर्य के कोमल एवं मधुर स्वरूप को अतीव चारु ढंग से उद्घाटित किया है जिसके करण नाटक का पूरा वातावरण मनमोहक एवं सरस हो गया है।

इस नाटक का सबसे महत्वपूर्ण अंश है प्रकृति का मानवीकरण। कालिदास जैसे प्रकृतिप्रेमी एवं सरसहृदय कवि के हाथों पड़कर प्रकृति भी दुष्यन्त, शकुन्तला, अनसूया तथा प्रियंवदा आदि की भाँति सजीव पात्र बन गई है। पूरे आश्रम के वातावरण में साम्यवाद छा गया है। प्रकृति यदि मानव जगत् के सुख-दुःख में भाग लेती है और उसके सौन्दर्यादि गुणों को द्विगुणित करती है तो मानव भी उसके प्रति पुत्र, भाई-बहिन का सा व्यवहार करता है। यही नहीं मानव (शकुन्तला आदि) उसकी सेवा में ही रत रह कर अपने जीवन को कृतार्थ करता है। कालिदास की इस प्रकार की अनुपम प्रकृति चित्रण सम्बन्धी कला ने नाटक की कीर्तिकौमुदी को दिदिगन्त में विकीर्ण कर दिया है।

इस प्रकार वस्तुयोजना, पात्र एवं प्रकृति का चित्रण, प्रकृति मानव तादात्म्य, अपूर्व वर्णन कौशल, मनोहर रस-योजना, भाषा-लालित्य आदि सभी दृष्टियों से अभिज्ञानशाकुन्तल संस्कृत काव्य-जगत् का ही नहीं अपितु समस्त विश्व साहित्य का महनीय अङ्ग बन गया है। उक्त गुणों से मण्डित शाकुन्तल की पाश्चात्त्य विद्वान् महाकवि गेटे ने यदि निम्नाङ्कित रूप से प्रशस्ति की तो उसमें न कोई अतिशयोक्ति है और न ही चाटुकारिता-

वासन्तं कुसुमं फलञ्च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वं च यद्
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयो-
रैश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रिय सखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्।।

भारतीय आलोचकों ने शाकुन्तल को कालिदास का सर्वस्व तथा नाटकों में सर्वाधिक रमणीय घोषित किया है-"कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुन्तलम्" और "काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला"।

श्री एम०आर० काले ने कालिदास की काव्य प्रतिभा की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि उनकी शैली विशेष रूप से पवित्र तथा अपूर्व है। उसमें अकृत्रिमता और संक्षिप्तता के साथ ही चित्रोपमता एबं मार्मिक व्यञ्जना भी है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के महत्त्व का निरूपण करते हुए पं० चन्द्रशेखर पाण्डेय ने लिखा है कि- "शकुन्तला कालिदास की नाट्यकला-कुशलता का चूडान्त निदर्शन है। सम्पूर्ण जगत् का वह हृदय हार बन चुका है। संसार के चुने हुए सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थों में से उसे आदरणीय स्थान प्राप्त है। कालिदास की इस अनुपम कृति में उनकी नाट्यप्रतिभा, कल्पना प्रचुरता, भाषा लालित्य, रसपरिपाक तथा मानव मनोविकारों के मार्मिक विश्लेषण की अद्भुत क्षमता अत्यन्त विशद रूप से प्रकट हुई है"।